

## आर्थिक सर्वेक्षण 2022

### प्रलम्बिस के लिये:

आर्थिक डेटा, महत्त्वपूर्ण आर्थिक शब्दावली, आर्थिक सर्वेक्षण, एशियाई विकास बैंक, विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विभिन्न सरकारी योजनाएँ।

### मेन्स के लिये:

वृद्धि एवं विकास, मौद्रिक नीति, योजना, पूंजी बाजार, राजकोषीय नीति, बैंकिंग क्षेत्र और एनबीएफसी, समावेशी विकास, आर्थिक सर्वेक्षण, संबंधित चर्चाएँ, सुझाव।

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में संसद के दोनों सदनों में राष्ट्रपति के अभिषेक के पश्चात् वित्त मंत्री द्वारा आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 को पेश किया गया।

- इस वर्ष के आर्थिक सर्वेक्षण का केंद्रीय विषय 'त्वरित वृष्टिकोण' है।
- इस वर्ष का सर्वेक्षण देश में ढाँचागत विकास को दर्शाने हेतु उपग्रह और भू-स्थानिक डेटा के उपयोग को उजागर करने के लिये विभिन्न उदाहरणों का उपयोग करता है।



## क्या होता है 'आर्थिक सर्वेक्षण'?

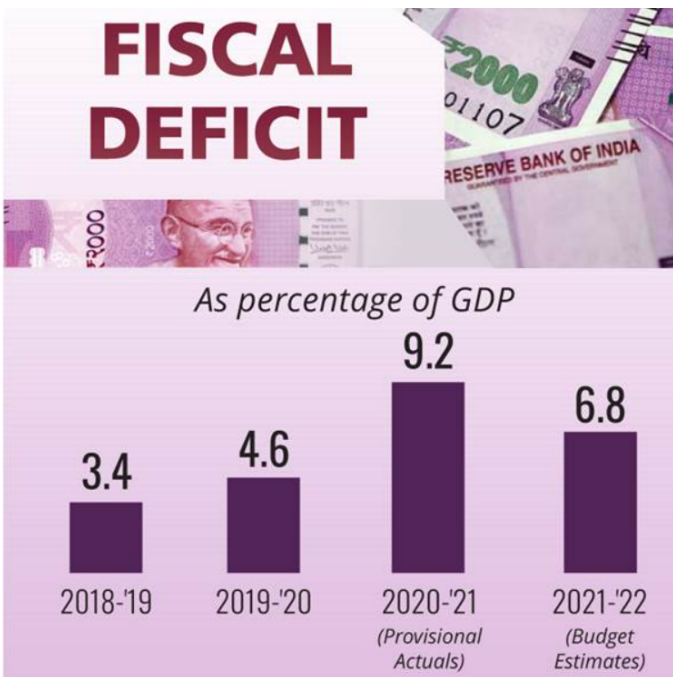
- भारत का 'आर्थिक सर्वेक्षण' वित्त मंत्रालय द्वारा जारी एक वार्षिक दस्तावेज़ है।
- इसे भारतीय अर्थव्यवस्था से संबंधित डेटा का आधिकारिक और अद्यतन स्रोत माना जाता है।
  - यह एक प्रकार की रिपोर्ट है, जिसमें सरकार द्वारा पछिले एक वर्ष में अर्थव्यवस्था की स्थिति से संबंधित आँकड़े प्रस्तुत किये जाते हैं, साथ ही सरकार इसमें अर्थव्यवस्था के समक्ष मौजूद प्रमुख चुनौतियों का अनुमान लगाती है और उनके संभावित समाधान प्रस्तुत करती है।
- इसे मुख्य आर्थिक सलाहकार के मार्गदर्शन में आर्थिक मामलों के विभाग (DEA) के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा तैयार किया जाता है।
- इसे प्रायः संसद में केंद्रीय बजट पेश किये जाने से एक दिन पहले प्रस्तुत किया जाता है।

- भारत में पहला आर्थिक सर्वेक्षण वर्ष 1950-51 में प्रस्तुत किया गया था। वर्ष 1964 तक इसे केंद्रीय बजट के साथ पेश किया जाता था। वर्ष 1964 से इसे बजट से अलग कर दिया गया।

## आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 के प्रमुख बिंदु

### ■ अर्थव्यवस्था की स्थिति (GDP वृद्धि):

- वर्ष 2020-21 में 7.3 प्रतिशत की गिरावट के बाद वर्ष 2021-22 में भारतीय अर्थव्यवस्था के 9.3 प्रतिशत (प्रारंभिक अग्रिम अनुमान) बढ़ने का अनुमान है।
- वर्ष 2022-23 में 'सकल घरेलू उत्पाद' की विकास दर 8-8.5 प्रतिशत रह सकती है।
  - वर्ष 2022-23 से संबंधित यह अनुमान 'वशिव बैंक' और 'एशियाई विकास बैंक' की क्रमशः 8.7 एवं 7.5 प्रतिशत जीडीपी विकास की संभावना के अनुरूप है।
  - अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के हालिया 'वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक' अनुमान के अनुसार, वर्ष 2022-23 में भारत की रियल जीडीपी विकास दर 9 प्रतिशत और 2023-24 में 7.1 प्रतिशत रहने की संभावना व्यक्त की गई है, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था आगामी तीन वर्ष तक दुनिया की सबसे तेज़ी से उभरती अर्थव्यवस्था बनी रहेगी।
- उच्च वदेशी मुद्रा भंडार, सतत प्रत्यक्ष वदेशी निवेश और निर्यात में वृद्धि के संयोजन से वर्ष 2022-23 में वैश्विक स्तर पर तरलता में संभावित संकुचन (Tapering) के विरुद्ध भारत को पर्याप्त समर्थन मिलेगा।
  - 'संकुचन' मात्स्रात्मक सहजता (QE) नीतियों का एक सैद्धांतिक विवरण है, जो एक केंद्रीय बैंक द्वारा लागू किया जाता है और जिसका उद्देश्य आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करना है।



### ■ राजकोषीय विकास:

- सतत राजस्व संग्रह और एक लक्षित व्यय नीति के परिणामस्वरूप अप्रैल-नवंबर, 2021 के दौरान राजकोषीय घाटे को बजट अनुमान के 46.2 प्रतिशत के स्तर पर सीमित रखने में सफलता मिली है।
- वित्तीय वर्ष 2021-22 के बजट अनुमान- 9.6 प्रतिशत की तुलना में केंद्र सरकार की राजस्व प्राप्तियों (अप्रैल-नवंबर, 2021) में 67.2 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष आधार पर) की बढ़ती दर की गई है।
- वर्ष-दर-वर्ष (YoY) आधार पर अप्रैल-नवंबर, 2021 के दौरान सकल कर-राजस्व में 50 प्रतिशत से अधिक की बढ़ती दर की गई।
- यह वर्ष 2019-20 के महामारी से पहले के स्तरों की तुलना में भी बेहतर प्रदर्शन है।
- 'कर राजस्व' केंद्र सरकार के 'प्राप्त बजट' का वह हिस्सा है, जो स्वयं केंद्रीय बजट के 'वार्षिक वित्तीय वितरण' का एक हिस्सा होता है।
- अप्रैल-नवंबर, 2021 के दौरान 'पूंजीगत व्यय' में 13.5% (YoY) की वृद्धि हुई है, जिसमें मुख्य तौर पर बुनियादी ढांचा-गहन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- कोविड-19 के चलते ऋण में बढ़ती के साथ वर्ष 2020-21 में केंद्र सरकार का ऋण बढ़कर जीडीपी का 59.3 प्रतिशत हो गया, जो कि वर्ष 2019-20 में जीडीपी के 49.1 प्रतिशत के स्तर पर था। हालांकि अर्थव्यवस्था में सुधार के साथ इसमें गिरावट आने का अनुमान है।
- कर राजस्व और सरकारी नीतियों ने 'अतिरिक्त राजकोषीय नीति हस्तक्षेप हेतु एक अवसर' प्रदान किया है।
- पूंजीगत व्यय पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए आर्थिक सर्वेक्षण में संकेत दिया गया है कि सरकार चालू वर्ष (2021-22) के लिये सकल घरेलू उत्पाद के 6.8% के राजकोषीय घाटे के लक्ष्य को प्राप्त करने की दशा में अग्रसर है।



## ■ बाह्य क्षेत्र:

- भारत के वाणज्यिक निर्यात एवं आयात ने बेहतरीन रकिवरी की है और चालू वित्तीय वर्ष के दौरान यह कोवडि महामारी से पहले के स्तरों से अत्यधिक हो गया है।
- पर्यटन से कमजोर राजस्व के बावजूद प्राप्तियों और भुगतान के महामारी से पहले के स्तरों पर पहुँचने के साथ सकल सेवाओं में अच्छी बढ़ोतरी दर्ज की गई।
- वदेशी निवेश में नरिंतर बढ़ोतरी, सकल **बाह्य वाणज्यिक उधारी** में बढ़ोतरी, बैंकिंग पूंजी में सुधार और अतरिकित **वशिष आहरण अधिकार** (SDR) आवंटन के आधार पर वर्ष 2021-22 की पहली छमाही में सकल पूंजी प्रवाह बढ़कर 65.6 बलियिन डॉलर हो गया है।
  - नवंबर, 2021 के अंत तक चीन, जापान और स्वटिज़रलैंड के बाद भारत चौथा सबसे अधिक वदेशी मुद्रा भंडार वाला देश था।

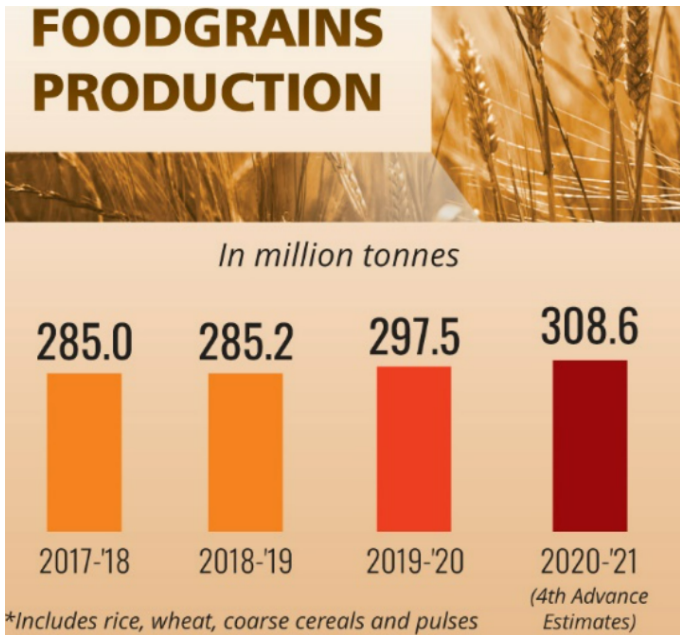
## ■ मौद्रिक प्रबंधन तथा वित्तीय मध्यस्थता:

- समग्र प्रणाली में 'तरलता' अधशेष की स्थिति बिनी रही।
  - वर्ष 2021-22 में **रेपो दर** 4 प्रतिशत पर बनी रही।
  - **भारतीय रिज़र्व बैंक** ने चलनधि प्रदान करने के लिये **सरकारी प्रतभित्त अधगिरहण कार्यक्रम** और वशिष दीर्घकालिक रेपो संचालन जैसे वभिनिन् उपाय किये।
- वाणज्यिक बैंकिंग प्रणाली ने अच्छी तरह से महामारी के आर्थिक प्रभाव का सामना किये है:
  - वर्ष 2021-22 में वार्षिक आधार पर ऋण वृद्धि अप्रैल, 2021 के 5.3 प्रतिशत से बढ़कर 31 दसिंबर, 2021 तक 9.2 प्रतिशत हुई।
  - **अनुसूचति वाणज्यिक बैंकों** (एससीबी) का कुल अनुत्पादक अग्रमि अनुपात 2017-18 के अंत के 11.2 प्रतिशत से घटकर सतिंबर, 2021 के अंत में 6.9 प्रतिशत हो गया।
  - समान अवधि के दौरान शुद्ध अनुत्पादक अग्रमि अनुपात 6 प्रतिशत से घटकर 2.2 प्रतिशत हो गया।
  - अनुसूचति वाणज्यिक बैंकों का **पूंजी-जोखमि भारांक परसिंपत्त** अनुपात वर्ष 2013-14 के 13 प्रतिशत से बढ़ते हुए सतिंबर, 2021 के अंत में 16.54 प्रतिशत रहा।
  - सतिंबर, 2021 में समाप्त होने वाली अवधि के लिये सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों हेतु परसिंपत्तियों और इक्विटि पर रटिरन सकारात्मक बना रहा।
- **पूंजी बाज़ारों के लिये असाधारण वर्ष:**
  - अप्रैल-नवंबर, 2021 में 75 **प्रारंभिक सार्वजनिक निरिगम** (IPO) से 89,066 करोड़ रुपए अर्जति किये गए, जो पछिले एक दशक के किसी भी वर्ष में सबसे अधिक है।

## ■ मूल्य तथा मुद्रास्फीति:

- औसत **शीर्ष सीपीआई-संयुक्त मुद्रास्फीति** 2021-22 (अप्रैल-दसिंबर) में सुधरकर 5.2 प्रतिशत हुई, जबकि 2020-21 की इसी अवधि में यह 6.6 प्रतिशत थी।
- खुदरा स्फीति में गरिावट खाद्य मुद्रास्फीति में सुधार के कारण आई। 2021-22 (अप्रैल से दसिंबर) में **औसत खाद्य मुद्रास्फीति** 2.9 प्रतिशत के नमिन स्तर पर रही, जबकि पछिले वर्ष की समान अवधि में यह 9.1 प्रतिशत थी।
- वर्ष के दौरान प्रभावी आपूर्ति प्रबंधन ने अधिकतर आवश्यक वस्तुओं की कीमतों को नयित्तरति रखा। दालों और खाद्य तेलों में मूल्य वृद्धि नयित्तरति करने के लिये सकरयि कदम उठाए गए।
- सैंटरल एक्साइज़ में कमी तथा बाद में अधिकतर राज्यों द्वारा **मूल्यवृद्धि कर** में कटौती से पेट्रोल तथा डीज़ल की कीमतों में सुधार लाने में मदद मली।
- **थोक मूल्य सूचकांक** (डब्ल्यूपीआई) पर आधारित थोक मुद्रास्फीति 2021-22 (अप्रैल से दसिंबर) के दौरान 12.5 प्रतिशत बढ़ी।
- ऐसा नमिनलखिति कारणों से हुआ:

- पछिले वर्ष में नमिन आधार
  - आर्थिक गतिविधियों में तेज़ी
  - कच्चे तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में भारी वृद्धति तथा अन्य आयातति वस्तुओं और
  - उच्च माल ढुलाई लागत
- सीपीआई-सी तथा डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति के बीच अंतर: मई, 2020 में यह अंतर शीर्ष पर 9.6 प्रतिशत रहा। लेकिन इस वर्ष खुदरा मुद्रास्फीति के दिसंबर, 2021 की थोक मुद्रास्फीति के 8.0 प्रतिशत के नीचे आने से इस अंतर में उलटफेर हुआ।
  - इस अंतर की व्याख्या नमिनलिखित कारकों द्वारा की जा सकती है:
    - बेस प्रभाव के कारण अंतर
    - दो सूचकांकों के स्कोप तथा कवरेज में अंतर
    - मूल्य संग्रह
    - कवर की गई वस्तुएँ
    - वस्तु भारों में अंतर तथा
    - आयातति कच्चे माल की कीमत ज़्यादा होने के कारण डब्ल्यूपीआई आधारति मुद्रास्फीति संवेदी हो जाती है।
  - डब्ल्यूपीआई में बेस प्रभाव की क्रमिक समाप्ति से सीपीआई-सी तथा डब्ल्यूपीआई में अंतर कम होने की आशा की जाती है।
- सतत विकास तथ जलवायु परिवर्तन:
- नीतिआयोग के एसडीजी इंडिया इंडेक्स तथा डैशबोर्ड पर भारत का समग्र स्कोर 2020-21 में सुधरकर 66 हो गया, जबकियह 2019-20 में 60 तथा 2018-19 में 57 था।
  - फ्रंट रनर्स (65-99 स्कोर) की संख्या 2020-21 में 22 राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशों में बढ़ी, जो 2019-20 में 10 थीं।
  - नीतिआयोग पूर्वोत्तर क्षेत्र ज़िला एसडीजी सूचकांक 2021-22 में पूर्वोत्तर भारत में 64 ज़िले फ्रंट रनर्स तथा 39 ज़िले परफॉर्मर रहे।
  - भारत, विश्व में दसवाँ सबसे बड़ा वन क्षेत्र वाला देश है।
  - वर्ष 2010 से 2020 के दौरान वन क्षेत्र वृद्धि के मामले में 2020 में भारत का विश्व में तीसरा स्थान रहा।
  - अगस्त, 2021 में प्लास्टिक कचरा प्रबंधन नियम, 2021 अधिसूचति कयि गए, जनिका उद्देश्य 2022 तक सगिल यूज़ प्लास्टिक को समाप्त करना है।
  - प्लास्टिक पैकेजिंग के लयि वसितारति उत्पादक दायतिव पर प्रारूप वनियमन अधिसूचति कयि गया।
  - गंगा तथा उसकी सहायक नदियों के तटों पर अत्यधिक प्रदूषणकारी उद्योगों (जीपीआई) की अनुपालन स्थिति 2017 में 39 प्रतिशत से सुधर कर 2020 में 81 प्रतिशत हो गई।
  - उत्सर्जति अपशष्टि में वर्ष 2017 के दैनिक रूप से 349.13 मिलियन लीटर से वर्ष 2020 में 280.20 मिलियन लीटर की कमी आई।
  - प्रधानमंत्री ने नवंबर, 2021 में ग्लासगो में आयोजति COP-26 के राष्ट्रीय वक्तव्य के हसिसे के रूप में उत्सर्जन में कमी लाने के लयि वर्ष 2030 तक प्रापत कयि जाने वाले महत्त्वाकांक्षी लक्ष्यों की घोषणा की।
  - एक शब्द 'LIFE' (पर्यावरण के लयि जीवनशैली) प्रारंभ करने की आवश्यकता महसूस करते हुए बना सोचे-समझे तथा वनिशकारी खपत के बदले सोचपूरण तथा जान-बूझकर उपयोग करने का आग्रह कयि गया है।



■ कृषि तथा खाद्य प्रबंधन:

- पछिले दो वर्षों में कृषि क्षेत्र में विकास देखा गया। देश के कुल मूल्यवर्द्धन में 18.8 प्रतिशत (2021-22) की महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई, इस तरह वर्ष 2020-21 में 3.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई और वर्ष 2021-22 में 3.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।
- न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) नीति का उपयोग फसल विधिकरण को प्रोत्साहित करने के लयि कयि जा रहा है।
- वर्ष 2014 की 'एसएस रीपोर्ट' की तुलना में नवीनतम 'सचिपणन असेसमेंट सर्वे' (एसएस) में फसल उत्पादन से शुद्ध प्राप्तियों में 22.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

- पशुपालन, डेयरी तथा मछली पालन सहित संबंधित क्षेत्रों से उच्च वृद्धि वाले क्षेत्रों के रूप में तथा कृषि क्षेत्रों में संपूर्ण वृद्धि के प्रमुख प्रेरक के रूप में उभर रहे हैं।
  - वर्ष 2019-20 में समाप्त होने वाले पिछले पाँच वर्षों में पशुधन क्षेत्र 8.15 प्रतिशत के सीएजीआर पर बढ़ा रहा।
- सरकार सूक्ष्म खाद्य उद्यमों को औपचारिक रूप देने के लिये समर्थन और बुनियादी ढाँचे के विकास, रियायती परविहन जैसे विभिन्न उपायों के माध्यम से खाद्य प्रसंस्करण को सहायता प्रदान करती है।
- सरकार ने **प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना (PMGKY)** जैसी योजनाओं के माध्यम से खाद्य सुरक्षा नेटवर्क कवरेज का और अधिक विस्तार किया है।

#### ■ उद्योग और बुनियादी ढाँचा:

- अप्रैल-नवंबर, 2021 के दौरान **औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP)** बढ़कर 17.4 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) हो गया है, जो अप्रैल-नवंबर, 2020 में (-)15.3 प्रतिशत था।
- भारतीय रेलवे के लिये पूंजीगत व्यय वर्ष 2009-2014 के दौरान 45,980 करोड़ रुपए केवर्षिक औसत से बढ़कर वर्ष 2020-21 में **155,181 करोड़ रुपए** हो गया और वर्ष 2021-22 में इसे **215,058 करोड़ रुपए तक बढ़ाने का लक्ष्य** रखा गया है, इस प्रकार इसमें वर्ष 2014 के स्तर की तुलना में पाँच गुना बढ़ोतरी हुई है।
- वर्ष 2020-21 में **सड़क निर्माण की सीमा को बढ़ाकर 36.5 किलोमीटर प्रतिदिन** कर दिया गया है जो वर्ष 2019-20 में 28 किलोमीटर प्रतिदिन थी, इस प्रकार इसमें 30.4 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज हुई है।
- बड़े कॉरपोरेट के बिक्री अनुपात से नविल लाभ वर्ष 2021-22 की जुलाई-सितंबर तमिही में महामारी के बावजूद 10.6 प्रतिशत के सर्वकालिक उच्चस्तर पर पहुँच गया है। (आरबीआई अध्ययन)
- **उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजना** के शुभारंभ से लेन-देन लागत घटाने और व्यापार को आसान बनाने के कार्य में सुधार लाने के उपायों के साथ-साथ डिजिटल और वस्तुगत दोनों बुनियादी ढाँचे को बढ़ावा मिला है, जिससे रकवरी की गति में मदद मिलेगी।

#### ■ सेवाएँ:

- **सकल मूल्य वृद्धि (Gross Value Added):**
  - जीवीए (GVA) की सेवाओं ने वर्ष 2021-22 की जुलाई-सितंबर तमिही में पूर्व-महामारी स्तर को पार कर लिया है।
  - व्यापार, परिवहन आदि जैसे कॉन्टेक्ट इंटेन्सिव सेक्टरों का GVA अभी भी पूर्व-महामारी स्तर से नीचे बना हुआ है।
  - समग्र सेवा क्षेत्र जीवीए में 2021-22 में 8.2 प्रतिशत की बढ़ोतरी होने की उम्मीद है।
- **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (Foreign Direct Invest):**
  - वर्ष 2021-22 की पहली छमाही के दौरान सेवा क्षेत्र ने 16.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) प्राप्त किया जो भारत में कुल एफडीआई प्रवाह का लगभग 54 प्रतिशत है।
- **सुधार:**
  - प्रमुख सरकारी सुधारों में आईटी-बीपीओ (IT-BPO) क्षेत्र में टेलिकॉम वनियमों को हटाना और नज्दी क्षेत्र के दगिगजों के लिये अंतरिक्ष क्षेत्र को खोलना शामिल है।
- **नरियात:**
  - सेवा नरियात ने वर्ष 2020-21 की जनवरी-मार्च तमिही में पूर्व-महामारी स्तर को पार कर लिया और इसमें वर्ष 2021-22 की पहली छमाही में 21.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई। सॉफ्टवेयर व आईटी सेवा नरियात के लिये वैश्विक मांग से इसमें मज़बूती आई है।
- **स्टार्ट-अपस:**
  - भारत अब अमेरिका और चीन के बाद विश्व में तीसरा सबसे बड़ा **स्टार्ट-अप इकोसिस्टम** बन गया है। नए मान्यता प्राप्त स्टार्ट-अप की संख्या वर्ष 2021-22 में बढ़कर 14 हज़ार से अधिक हो गई है जो वर्ष 2016-17 में केवल 735 थी।
  - 44 भारतीय स्टार्ट-अप ने 2021 में **यूनिर्कॉर्न** दर्जा हासिल किया, इससे यूनिर्कॉर्न स्टार्ट-अप की कुल संख्या 83 हो गई है और इनमें से अधिकांश सेवा क्षेत्र में हैं।

#### ■ सामाजिक बुनियादी ढाँचा और रोज़गार:

- **रोज़गार:**
  - अर्थव्यवस्था के पुनरुत्थान से रोज़गार सूचकांक वर्ष 2020-21 की अंतिम तमिही के दौरान वापस पूर्व-महामारी स्तर पर आ गए हैं।
  - मार्च, 2021 तक प्राप्त तमिही **आवधिक श्रमबल सर्वेक्षण (PFLS)** आँकड़ों के अनुसार, महामारी के कारण प्रभावित शहरी क्षेत्रों में रोज़गार लगभग पूर्व महामारी स्तर तक वापस आ गए हैं।
  - **करमचारी भविय नधि संगठन (EPFO)** के आँकड़ों के अनुसार, दूसरी कोवडि-19 लहर के दौरान रोज़गारों का औपचारीकरण जारी रहा। कोवडि-19 की पहली लहर की तुलना में रोज़गारों के औपचारीकरण पर कोवडि का प्रतिकूल प्रभाव कम रहा है।
- **सामाजिक अवसंरचना:**
  - सामाजिक सेवाओं (स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य) पर जीडीपी के अनुपात के रूप में केंद्र और राज्यों का व्यय जो वर्ष 2014-15 में 6.2 प्रतिशत था, वर्ष 2021-22 (बजट अनुमान) में बढ़कर 8.6 प्रतिशत हो गया।
  - **राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 के अनुसार:**
    - कुल प्रजनन दर (TFR) वर्ष 2019-21 में घटकर 2 हो गई, जो वर्ष 2015-16 में 2.2 थी।
    - शिशु मृत्यु दर (IMR), पाँच वर्ष से कम आयु के शिशुओं की मृत्यु दर में कमी आई है और अस्पतालों/प्रसव केंद्रों में शिशुओं के जन्म में वर्ष 2015-16 की तुलना में वर्ष 2019-21 में सुधार हुआ है।
  - **जल जीवन मशिन** के तहत 83 ज़िले 'हर घर जल', प्रदान करने वाले ज़िले बन गए हैं।
  - महामारी के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में असंगठित श्रम के लिये बफर उपलब्ध कराने हेतु **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना (MNREGS)** के लिये नधियों का अधिक आवंटन।
  - **राष्ट्रीय स्वास्थ्य मशिन** के अलावा केंद्रीय बजट वर्ष 2021-22 में **आयुषमान भारत** स्वास्थ्य अवसंरचना मशिन, प्राथमिक, माध्यमिक एवं तृतीयक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों की क्षमता वकिसति करने, मौजूदा राष्ट्रीय संस्थानों को मज़बूत करने और ज़रूरतों को पूरा करने तथा उभरती बीमारियों का पता लगाने व उनका इलाज़ करने के लिये नए संस्थान बनाने हेतु एक नई केंद्र

प्रायोजति योजना की घोषणा की गई है।

- भारत उन गनि-चुने देशों में शामिल है, जो कोवडि-19 के टीके तैयार कर रहे हैं। देश ने भारत में बने दो कोवडि-19 टीकों के साथ शुरुआत की। [आत्मनरिभर भारत](#) के दृष्टिकोण के अनुरूप भारत की पहली घरेलू कोवडि-19 वैक्सीन (**COVAXIN**), भारत बायोटेक इंटरनेशनल लिमिटेड द्वारा **भारतीय चकितिसा अनुसंधान परिषद (ICMR)** के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ **वायरोलॉजी** के सहयोग से विकसित और नरिमति की गई थी।
- टीकाकरण की प्रगतिको न केवल **सवास्थ्य प्रतिक्रिया संकेतक के रूप में** देखा जाना चाहयि, बल्कि बार-बार **महामारी की लहर के कारण होने वाले आर्थकि व्यवधानों के खिलाफ एक बफर के रूप में** भी देखा जाना चाहयि।

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/economic-survey-2022>